REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 8 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2019

संजीव की कहानियों में शिल्प अवलोकन की आलोचना

प्रा.डॉ. रामचंद्र मारूती लोंढे
क्रांतिसिंह नाना पाटील महाविद्यालय, वाळवा.
ता. वाळवा, जि. सांगली.

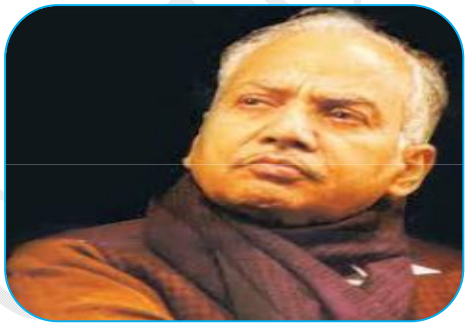

हिंदी साहित्य में संवेदना और शिल्प के प्रति रचनात्मक व्यवहार के संबंध में एक बहस देखने को मिलती है। भारतीय साहित्य में रस, ध्वनि, अलंकार आदि संप्रदायों के बीच भी यह बहस देखी जा सकती है। रचना निर्माण के लिए विषय ज्यादा महत्वपूर्ण है या कला यह बहस आधुनिक साहित्य में प्रमुखता से मौजुद रही है।

जैनेंद्र जी ने लिखा है कि, ''मुझे ख्याल होता है कि कहीं ऐसा तो नहीं की कहानी कला या शिल्प ही नहीं बल्कि सृष्टि हो। हर शिशु अपना बनाव और अपना स्वभाव लेकर जन्मता है।''[1] संजीव इससे पूरी तरह सहमत नहीं है। वे भी कथ्य को प्राथमिक तत्व मानते है लेकिन उनके अनुसार कथ्य को असरदार बनाने में शिल्प सहयोगी तत्व हाता है। संजीव के शब्दों मे, ''कुछ उदारवादियों का मत है कि कथ्य खुद अपने अनुरूप शिल्प तलाश लेता है। पर यह अर्ध सत्य मात्र है एक ही गीत की प्रस्तुति जिस तरह भिन्न – भिन्न रागों में हो सकती है, उसी तरह एकही कथ्य अलग – अलग शिल्प में ढलता देखा गया है।''[2]

वस्तुतः विषय चयन से लेकर उसे प्रस्तुत करने के ढंग तक कहानीकार की व्यक्तिगत पसंद – नापसंद, संवाद आदायगी, संप्रेषण संबंधी उसकी निजी धारणाओं और ज्ञान की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। संजीव एक जनवादी यथार्थवादी कहानीकार है। वे सामाजिक परिवर्तन को अपनी कहानियों का लक्ष्य मानते है। लेकिन खुद को वे प्रयोगधर्मी कहानीकार के रूप में भी रेखांकित करते है। यह प्रयोगनिर्मिता शिल्प के स्तर पर नजर आता है। कथ्य में कमजोर कहानियों को शिल्प की बैसाखी की जरूरत होती है, इस धारणा को संजीव अर्ध सत्य मानते है। शिल्प को उन्होंने यथार्थवाद की ताकद के रूप में साधने की जरूरत पर बल दिया है।''[3] संजीव की कहानियों में शिल्प अवलोकन की आलोचना स्पष्ट करने के लिए उनकी कहानियों का अध्ययन करना जरूरी लगता है।

वार्तालाप द्वारा आरंभ

कहानियों का प्रारंभ पात्रों के संवाद से होता है और इस संवाद के माध्यम से कथावस्तु का संकेत पाठक को मिल जाता है। जो कहानी की बुनावट में प्रभावात्मक साबित होता है जैसे – ''क्यों साब, ट्रेन दो घंटे लेट है क्या?'' मैं किसी पत्रिका में डुबा हुआ था कि यह सवाल आया।

''एनाऊसिंग से तो ऐसा ही लगता है।'' मैंने यू ही सर गडाए हुए जवाब उछाल दिया।

आप लेखक है न ? प्रश्नकर्ता के दूसरे सवाल पर मैंने सोचकर ऑखे ऊपर उठाई। एक तीस – पैंतीस साल का औसत कद–काठी का कोई परेशान–सा युवक था। शायद मुझे जानता भी था।

''क्यों ?''

''आप के पास वक्त हो तो एक प्लॉट मैं दूँ आपको। मान न मान, मैं तेरा मेहमान। मुझे थोडी झुंझलाहट हुई। आपको परेशानी न हो तो उस काठ

बादाम पेड के पास चलें, वहॉ एकांत है।''

मुझे आदमी थोडा सक्ती लगा।'' कोई बात नहीं, यहॉ भी चलेगा।'' कहकर वह बेंच मेरे बगल में धस्ससा बैठ गया और मेरी अवज्ञा को गर्द की तरह झाडते हुए वह शुरू हो गया..''[4]

''मुझे तो वह कौन है।'' मामी की तर्जनी जादू की छड़ी की तरह उस लडकी की ओर तनी हुई थी जो कई हमजोली सहेलियों के साथ सिंदूरी झाडे वाले पीले अमरूदों का मोलभाव कर रही थी। जैसी लडकी, वैसे अमरूद! गजब का मैच! हं पहली ही नजर में फिदा हो गया था। जाने क्या हुआ वे अमरूद की दूकान से भरभराकर भागी और जा धमकी कंघी चोटी–फीला–आलता की दूकान पर।

'लो, नजर लग गयी न तुम्हारी।'

'आखिर वह है कौन?

'अरे यही तो है वह लडकी, जो तुम्हारी लडाका मॉ और चुगलखोर बहन को ठीक करने तुम्हारे घर आनेवाली है। नहीं पहचान पाये न? पहचानोगे भी कैसे भानजे विवाह के बखत तो तुम्हे धोती भी बॉधनी नहीं आती थी।''[5]

चरित्र को लेकर कहानी का आरंभ –

कहानी में चरित्र को महत्त्वपूर्ण माना जाता है। पाठक वर्ग को कहानी के मुख्य पात्रों की विशेषताओं के बारे में प्रारंभिक अवस्था में ही संकेत मिल जाता है। संजीव की कहानियों के शिल्प अवलोकन की शुरूआत करते ही सबसे पहले कथावाचक से मुलाकात होती है। पहले कहानी संग्रह 'तीस साल का सफरनामा' की पहली कहानी 'अपराध' से लेकर अंतिम संग्रह 'खोज' तक के कहानियों में कथावाचक प्रमुखता के साथ मौजूद है। 'अपराध' लिटरेचर, चाकरी, 'भूमिका', 'सूखी नदी के घाट पर' आदि कहानियों के कथावाचक की केन्द्रिय अस्थिति है। आलोचक रविभूषण मानते है कि, ''संजीव की कहानियों में अनुभव से अधिक विचार तत्व प्रमुख है और इसीकारण अधिसंख्य कहानियों में कथावाचक है और स्वंय कथाकार की अपनी टिप्पणियॉ है।''[6]

संवादात्मक विधि –

इस पध्दति के अंतर्गत पात्र के व्यक्तिमत्व में प्रभावव्यक्ति आ जाती है। व्यक्ति के आचार–विचार, तर्क, भावनाऍ एव संवेदनाऍ आदि इस पध्दति के माध्यम से अभिव्यक्त होती है जैसे 'सूखी नदी के घाट पर कहानी में भावनाओं को अभिव्यक्त करनेवाला संवाद परिलक्षित हुआ है – ''क्या बात है, कुछ बोलेगी नही?'' ''क्या बोलूँ..... ?'' उसने हॅसकर पूछा, 'अच्छा यह बताइए आपके,

''बाल–बच्चे कितने है?''

''तीन। दो बेटियॉ, एक बेटा।''

''उनकी मॉ कैसी है?''

''ठीक। मगर कोई आप जैसी तो नहीं हो सकती।''

पता नहीं, उसने क्या पूछा था और जवाब में क्या कह बैठा था।

''यह आप कह रहे है?''

क्यों?

प्रश्न को अनसुना करते हुए उसने मुझे हाथ के इशारे से बताया।[7]

व्यंग्यात्मक संवाद –

संजीव की कहानियों में व्यंग्यात्मक संवाद दिखाई देते है। व्यंग्यात्मक संवाद से कहानियों में सजीवता एवं स्वाभाविकता आ जाती है – उदा. – 'ब्लॅक होल' कहानी में व्यंग्यात्मक संवाद परिलक्षित होता है – '' अब यह तुम पर डिपैड करता है अंक कि तुम अपने दिमाग को 'बिग बैग– बनने देना पसंद करोगे या ब्लैक होल।' अंकुर ने ऑख बंद मधुमक्खी के छते से अपना ध्यान ब्लैकहोल पर संघनित किया। मधुमक्खी के छते से एक मक्खी उडी, 'जब किसी तारे का हाइड्रोजन हीलियम में बदलता है...' किस प्रोसेस से?'' वे खुद ही आगे धकलती फिर खुद ही बीच में आ खडी होती।

इस उध्दरण से स्पष्ट है कि अंकुर की मॉ अलका अहंकार से भौतिक वादी दौड में अपने पति को सम्मिलित कर अपने बेटे पर अपनी इच्छाओं – महत्वाकाक्षांओं को लादकर रेस के घोडे के रूप में उसका इस्तेमाल कर हवा में उडना चाहती है।

अत्यंत संयत एवं छोटे संवाद –

संजीव के कहानी साहित्य में संवाद अत्यंत छोटे, आकर्षक एवं प्रभावात्मक दिखाई देते है। उदा. – 'खिंचाव' कहानी में संवाद अत्यंत छोटे एवं असरदार दिखाई देते है– ''अब्बू उन्होंने हाथ – पॉव बॉध दिये थे मेरे।''

अब्बू चुप।
अपने नई कुछ उठा नहीं रखा हमने, लेकिन...''
अब्बू फिर भी चूप।
''अब्बू मैं कर भी क्या सकती थी?''
''वो तुमसे शादी करेंगे?'' ''बाप ने नजर नीची करते हुए पूछा। वो तो मै खुद नहीं करूँगी।''
तो फिर किसी नदी, तालाब या कुँए में डुब के मर भी नई सकती थी?''
चाबुक–सी बरसी थी अब्बू की आवाज।''[8]

इससे स्पष्ट होता है कि छोटे–छोटे संवादो के माध्यम से संजीव के कथा–साहित्य में सरसता एवं रोचकता निर्माण हुई है।

वातावरण शिल्प –

उपन्यास की भॉति कहानी में वातावरण का विशद चित्रण करने के लिए स्थान नहीं होता कहानी लेखक अपनी कथा के देश–प्रदेश, आकाश–अवकाश का प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से स्पष्ट करता है। काल बोध से कहानी को स्पष्ट करने में सहायता मिलती है। वातावरण शिल्प कहानी का अत्यंत आवश्यक अंग है। कहानी में वातावरण शिल्प का महत्व बताते हुए हिंदी के थोर आलोचक गुलाबराय कहते है – ''कहानी में उपन्यास की भॉति वातावरण चित्रण के लिए अधिक गुंजाइश नहीं होती, फिर भी कहानी में देश–काल की स्पष्टता लाने के लिए इसका चित्रण आवश्यक हो जाता है वातावरण भौतिक और मानसिक दोनों ही प्रकार का हो सकता है। और भौतिक वातावरण भी प्रायः ऐसा होता है।[9] उपर्युक्त उध्दरण से विदित होता है कि कहानी की सफलता तथा विश्वसनीयता के लिए देश–काल वातावरण शिल्प की आवश्यकता है।

संजीव की कहानियों में सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक चित्रण दृष्टिगोचर होता है। संजीव की कहानियों के बारे में आलोचक रविभूषण के विचार योग्य लगते है, ''संजीव की कहानियों का फलक व्यापक है, उनकी कहानियों का भूगोल भी बडा है। भारतीय राजसत्ता और व्यवस्था, पुलिस तंत्र, प्रशासन नक्सलवादी भारतीय निम्नवर्ण, मध्यवर्ग, कारखाना आदिवासी समूह, मुस्लिम समाज लिंग और जाति, नर–बाजीगर और खानाबदोष जाति, पुराणे सामंत जमींदार और नए सामंत, न्यायव्यवस्था, नेता विज्ञान, धर्म, सगुनिये, फौजी, जेल, दलित नारी, सेठ साहूकार, शिक्षक कलाकार, नाटक नौटंकी से पति–पत्नि पहाडी चरित्र आदि उनके कहानियों में भरे पडे है। जाहिर हे इनके वर्णन और चित्रण की कथा विधियॉ भिन्न है। भाषा अलग है, चित्रण अलग है।''10

कहानियों के प्रभावात्मक एवं सफल बनाने के लिए शिल्प अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान देता है। जिसमें कहानी से समाज को अच्छा संदेश मिलता है और जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। कथ्य को असरधार बनाने के लिए अनेक रस, किस्से प्रसंग की जरुरत होती है। साथ ही शिल्प कहानियों को रंगतदार और असरदार बनाता है। शिल्प कहानी के विकास में योगदान देता हुआ समाज का वास्तविक चित्रण करता है। जिसमे भावनात्मक मानसिक बौध्दिक एवं सामाजिक अभिव्यंजना परिलक्षित होती है।

संदर्भ –

1. जैनेन्द्र – साहित्य का श्रेय और प्रेय, पृ. 322
2. बीसवी शताब्दी का साहित्य, खण्ड – 1, पृ. 311

3. डॉ. सुरेश सिन्हा – 'हिंदी कहानी उद्‌भव और विकास' पृ. 10, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1967.
4. संजीव – 'ब्लैक होल', पृ. 10
5. संजीव– 'भूमिका तथा अन्य कहानियॉ', पृ. 116, पराग प्रकाशन, दिल्ली, प्र.स. 1984
6. वही – 'ब्लैक होल', पृ. 16, दिशा प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.स. 1995
7. वही – 'प्रेरणास्त्रोत तथा अन्य कहानियॉ, पृ. 158, किताबघर नई दिल्ली, प्र.स. 1996
8. डॉ. गुलाबराय – 'काव्य के रुप', पृ. 223, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली, तृतीय संस्करण, 1933
9. संपा– 'ज्ञान रंजन पहल' फरवरी, 2000, पृ. 10–17

LBP PUBLICATION